

विद्वत्त्व परिषद द्वारा समीक्षित पत्रिका

ISSN 2349-1906

साहित्य

वर्ष 8 अंक 35-36 जुलाई-दिसम्बर, 2023

यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा की साक्षी

संपादक

प्रो. कलानाथ मिश्र



तिलका माँझी विश्वविद्यालय के ख्यातिलब्ध प्राध्यापक एवं आलोचक डॉ. बहादुर विश्व जी की लिखित सद्यः प्रकाशित पुस्तक "अमीर खुसरो: जीवन और साहित्य" ग्रहण करते हुए साहित्य यात्रा के संपादक डॉ. कलानाथ मिश्रा।



यशस्विनी साहित्यकार पूनम आनंद अपनी सद्यः प्रकाशित पुस्तकें साहित्य यात्रा के संपादक को भेंट करती हुई।



नॉट्रेडेम एकेडमी के जूली हॉल में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लिए विभिन्न विद्यालय के छात्रों एवं गणमान्य निर्णायक-मण्डली के संग डॉ. कलानाथ मिश्रा।

विद्वत् परिषद् द्वारा समीक्षित पत्रिका

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

संपादक
कलानाथ मिश्र

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

सदस्यता फार्म

‘साहित्य यात्रा’ विशिष्ट सदस्यता	:	1100/-
एक वर्ष (4 अंक)	:	500/- (डाक खर्च सहित)
तीन वर्ष (12 अंक)	:	1500/- (डाक खर्च सहित)
संस्थागत मूल्य (3 वर्ष)	:	1500/-
आजीवन सदस्यता	:	15000/-
विदेश के लिए (3 अंक)	:	60 डॉलर

(पटना के बाहर के चेक पर कृपया बैंक कमीशन के 40/- रुपये अतिरिक्त जोड़ दें।)

उक्त दर के अनुरूप मैं चेक / ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। ऑन लाईन खाते में डाल दिया हूँ (रेपफरेन्स नं.) कृपया मुझे ग्राहक बना कर मेरी प्रति निम्न पते पर भिजवाएँ।

नाम :-	पद :-
पता :-	
दूरभाष 1 :	दूरभाष 2 :
शहर :	पिन नं. :-
देश :	ईमेल -
संकाय / विभाग / विद्यालय :	

भुगतान की जानकारी

नकद/बैंक रकम : रु. द्वारा

डी0डी0/प्रत्यक्ष हस्तांतरण/चेक/बैंक का नाम :

डी0डी/चेक/स्थानान्तरण संख्या : दिनांक :

दिनांक :	हस्ताक्षर (या पूरा नाम लिखें)
----------	----------------------------------

ऑनलाइन हस्तांतरण विवरण :- साहित्य यात्रा, पंजाब नेशनल बैंक,
एस.के. पुरी शाखा, पटना-1

खाता क्रमांक- 6236000100016263, IFSC- PUNB0623600

वेबसाइट - www.sahityayatra.com



यहाँ से काटिए



साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

वर्ष-8

संयुक्तांक-35-36

जुलाई-दिसम्बर, 2023

परामर्शी

डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित

डॉ. प्रेम जनमेजय

डॉ. हरीश नवल

सम्पादकीय सलाहकार

श्री आशीष कंधवे

समीक्षक मंडल

प्रो. शैलेन्द्र कुमार चौधरी

संकायाध्यक्ष, मानविकी संकाय

(पूर्व विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,

कॉलेज ऑफ कॉमर्स)

प्रो. प्रतिभा सहाय

(पूर्व आचार्य, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग)

डॉ. सुजीत दूबे

(अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,

मनोविज्ञान विभाग, ए.एन. कॉलेज, पटना)

उप-संपादक

डॉ. सत्यप्रिय पाण्डेय

डॉ. करुणा पीटर 'कमल'

सहायक संपादक

डॉ. रवीन्द्र पाठक

डॉ. अमित कुमार मिश्रा

आवरण - चित्र

अंतरिक्ष - चित्रकार एवं फोटोग्राफर

साज-सज्जा

निशिकान्त / मनोज कुमार

संपादक

कलानाथ मिश्र



साहित्य यात्रा में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा पटना क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में संपादन से जुड़े सभी पद गैर-व्यावसायिक एवं अवैतनिक हैं। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी आलेख का पुनर्प्रकाशन के पूर्व संपादक की अनुमति अनिवार्य है।

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

RNI No. : BIHHINO5272

ISSN 2349-1906

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा पूर्व अनुमोदित

विद्वत् परिषद् द्वारा समीक्षित पत्रिका

© स्वत्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के पुनः उपयोग के लिए लेखक,

अनुवादक अथवा साहित्य यात्रा की स्वीकृति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय

‘अभ्युदय’

ई-112, श्रीकृष्णपुरी

पटना-800001 (बिहार)

मोबाइल : 8434880332/09304302308/09835063713/9546138889

ई-मेल : sahiyayatra@gmail.com

kalanath@gmail.com

वेब साईट : <http://www.sahityayatra.com>

मूल्य : ₹ 100/- (एक सौ रुपये मात्र)

प्राप्ति स्थान :

पटना-

आलोक कुमार सिंह, मैगजीन हाउस, शालीमार स्टूडियो के पास,

सहदेव महतो मार्ग, बोरिंग रोड, पटना-800001

दिल्ली -

1. आर.के. मैगजीन सेन्टर, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट,
दिल्ली, वि.वि., दिल्ली-11007

2. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, मंडी हाउस, नई दिल्ली

शुल्क ‘साहित्य यात्रा’ के नाम पर भेजें।

‘साहित्य यात्रा’ त्रैमासिक डॉ. कलानाथ मिश्र के स्वामित्व में और उनके द्वारा ‘अभ्युदय’

ई-112, श्रीकृष्णपुरी, पटना-800001, बिहार से प्रकाशित तथा ज्ञान गंगा क्रियेशन्स,

पटना से मुद्रित। स्वामी/संपादक/प्रकाशक/मुद्रक : प्रो. कलानाथ मिश्र।

अनुक्रम

संपादकीय	07
आलेख	
निराला और रामविलास शर्मा	13
प्रकाश मनु	
रामदरश मिश्र के उपन्यास : यथार्थ और आदर्श से रोमांस करती किस्सागोई	36
डॉ. ओम निश्चल	
‘दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र’ : चिंतन-प्रतिचिंतन	48
प्रो. (डॉ.) गणेश प्रसाद	
दुष्यंत कुमार की कविता में यथार्थवादी दृष्टिकोण	56
गणेश चन्द्र राही	
प्रेमचंद की ऐतिहासिक कहानियाँ तथा उपन्यास	70
राजेन्द्र सिंह गहलौत	
महादेवी वर्मा के निबंधों में नारी-चेतना का स्वर	74
डॉ. दीपा श्रीवास्तव	
लोक तथा शास्त्र के बीच साहित्य के ‘आचार्यसेतु’	84
सागर तोमर	
समकालीन हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त किन्नर संघर्ष	87
रामेश्वर महादेव वाढ़ेकर	
प्रवासी कथाकार तेजेन्द्र शर्मा का कथा संसार.....	94
पद्मा मिश्रा	

हिन्दू जीवन पद्धति और रामचन्द्र शुक्ल की समीक्षा दृष्टि सदानन्द प्रसाद गुप्त	99
कहानी	
रिश्तों का मोल श्याम बिहारी महतो	111
आलेख	
साहित्य में किसान शिवमूर्ति के 'आखिरी छलांग' उपन्यास के संदर्भ में राकेश कुमार कुमावत	120
गीतों के राजकुमार : गोपाल सिंह नेपाली रामबाबू नीरव	125
पुस्तक समीक्षा	
साहित्य सरोवर में कहानी विधा का हंस : 'सरप्राइज गिफ्ट' पाण्डेय शशि भूषण 'शीतांशु'	130
आशा - बारहखड़ी विधाता बाँचे : पद्मश्री उषाकिरण खान अभिषेक मुखर्जी	133
आलेख	
बिहार की साहित्यिक पत्रकारिता का उपेक्षित अध्याय : नव चेतना से अम्बालिका का सफर डॉ. अमित कुमार मिश्रा	141
कविता	
मैं तो यहाँ हूँ रामदरश मिश्र	149

सम्पादकीय

यशस्वी साहित्यकार रामदरश मिश्र विगत 15 अगस्त को अपने सौवें जन्मदिन में प्रवेश कर गए। हिंदी साहित्य जगत के लिए यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि हिंदी के युग पुरुष निरंतर कलम की साधना में रत हैं। विगत दिनों 'साहित्य-यात्रा' के 29 वीं अंक में आदरणीय रामदरश मिश्र जी से मेरी बातचीत प्रकाशित हुई थी। मिश्र जी अपनी रचनाधर्मिता और ऊर्जा से परिपूर्ण दिखे। बातचीत के क्रम में वे कई कविता और गजल भी सुनाते जा रहे थे। मिश्र जी के साहित्य में समाज का वास्तविक स्वरूप सामने आया है। संभवतः आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के सानिध्य का ही यह सुगंध समेटे हुए हैं। उनकी कविताओं, उनकी कहानियों, उनके उपन्यास और एक आलोचक के रूप में उनकी दृष्टि से हिंदी अनुप्राणित होता रहा है। समाज, सांस्कृतिक दर्शन, गाँव, अंचल और शहर कुछ भी उनकी लेखनी से अछूता नहीं लगता। उन्होंने मुझसे बातचीत में कहा था— “यह सही है कि कोई भी साहित्य तभी मूल्यवान होता है, सार्थक होता है, जब उसमें समाज बोलता है। वे कहते हैं कि समाज कल्पना से आ सकता है, अनुभव से आ सकता है और अध्ययन से भी आ सकता है। बहुत से लोग सिद्धांतों के आधार पर लिखते हैं। हमारे समाज का रूप क्या है? मूल्य क्या है? किसान क्या है? मजदूर क्या है? इसकी जानकारी उन्हें किताब से होती है, अनुभव से नहीं।” वे कहते हैं इस दृष्टि से मैं सौभाग्यशाली हूँ कि गाँव में पैदा हुआ, वह दो नदियों के बीच कछार का गाँव है। बाढ़ से उत्पन्न जो संकट है, समस्याएँ हैं, उन्हें गाँव झेलता रहा है। वह संकट मेरा अनुभव बनता रहा है। मिश्र जी के पास एक दीर्घकाल का अनुभव है। उनके उस अनुभव में समाज की अच्छाइयाँ, बुराइयाँ, सामूहिकता के साथ-साथ सुख-दुखात्मक अनुभूति की एक लंबी श्रृंखला है। वे स्वतंत्र भाव से बिना किसी पूर्वाग्रह के लिखते रहे हैं। उन्होंने कभी भी किसी वाद को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। इस क्रम में वे जैनेंद्र जी के इस उक्ति का उल्लेख करते हैं—“ वाद नहीं लिखता है, आदमी लिखता है। जो वाद के माध्यम से चर्चित होते हैं, वे आज है कल गायब होते हैं। बचते वही हैं, जो वाद के बावजूद अच्छा लिखते हैं। जिन्हें समय की पहचान है। समय में जो नया यथार्थ रहा है, उस यथार्थ को पहचानना महत्वपूर्ण है।”

रामदरश जी का शतायु होना जितना हर्ष का विषय है, उससे भी अधिक प्रसन्नता इस बात की है कि वे अभी भी साहित्य सृजन में सक्रिय हैं, समर्थ हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन किया और उन्हें अपूर्व लोकप्रियता भी प्राप्त हुई है। वे अपने जीवन के उतार-चढ़ाव व घटनाओं को कहानियों, कविताओं, उपन्यासों के जरिए पाठकों के समक्ष रखते रहे हैं। उनकी सभी रचनाएँ अद्भुत बानगी पेश करते हैं। उनका पहला काव्य संग्रह 'पथ के गीत' दिल को छू जानेवाली रचना है। इसके प्रायः सभी गीत पारंपरिक गीत हैं। 'काली घर, सर्प दंश, दिनचर्या' जैसे कहानी संग्रह उनकी सोच और उनकी कल्पना को एक नए आकाश में ले जाने की क्षमता रखते हैं। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'अपने लोग, पानी के प्राचीर, जल टूटता हुआ, दूसरा घर' साहित्य की दुनिया में विशेष स्थान रखते हैं। डायरी साहित्य को एक नई ऊँचाई देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गजलों के क्षेत्र में भी उन्होंने गद्य से कम लेखन नहीं किया है। अपनी आत्मकथा के जरिए वे अपने जीवन के उन विषम लम्हों से पाठकों का परिचय कराते हैं, जिसके लिए अद्भुत साहस की